"बन"

"एक ओंकार सतिगुरु प्रसादि"

- "काहे रे बन खोजन जाई। सरब निवासी सदा अलेपा तोहि सगि समाई। रहाउ। पुहप मधि जिऊ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई। तैसे ही हरि बसे निरंतर घट ही खोजहु भाई। बाहरि भीतरि ऐको जानहु इहु गुर गिआन बताई। जन नानक बिनु आपा चीने मिटै न भ्रम की काई।" (684)

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

FURTHER RECORDING NOT AVAILABLE